आपदा से आप क्या समझते हैं?

अचानक से होने वाली ऐसी विनाशकारी और विध्वंसक घटना जिससे जान-माल की भारी क्षति हो, आपदा कहलाती है। आपदा के कारण मनुष्य और जीव - जन्तु संकट में पड़ते हैं।

जैसे - भूकम्प, सुनामी, तूफान, आतंकवादी हमला, दंगा, युद्ध आदि।

आपदा कितने प्रकार की होती है ?

आपदा दो प्रकार की होती है –

(i) प्राकृतिक आपदा - भूकंप, सुनामी, बाढ़, सूखा, आँधी, चक्रवात, बादल का फटना आदि।

(ii) मानव जनित आपदा - आतंकवाद, लूटपाट, आगलगी, युद्ध, धार्मिक या जातीय दंगे आदि।

आपदा प्रबंधन की आवश्यकता क्यों है ?

आपदा कभी भी बताकर नहीं आती, यह अचानक से आती है और जान-माल की भारी क्षति कर जाती है। मनुष्य का जीवन संकट में पड़ा रहता है, विकास के कार्य में भी बाधा उत्पन्न होती है। इसलिए आपदा प्रबंधन की आवश्यकता है।

प्राकृतिक आपदा एवं मानव जनित आपदा में अंतर सही उदाहरणों के साथ प्रस्तुत कीजिए।

अचानक से होने वाली ऐसी विनाशकारी और विध्वंसक घटना जिससे जान-माल की भारी क्षति हो, आपदा कहलाती है। आपदा के कारण मनुष्य और जीव - जन्तु संकट में पड़ते हैं।

आपदा दो प्रकार के होते है -

(i) प्राकृतिक आपदा - ऐसी आपदा जो प्राकृतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप आती है, तथा ऐसी आपदाओं पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता है। इन आपदाओं की जननी प्रकृति होती है, परंतु मनुष्य द्वारा पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ से भी यह घटती हैं।

जैसे - भूकंप, भूस्खलन, बाढ़, सुनामी इत्यादि।

प्लेग, डेंगू, मलेरिया जैसे विभिन्न महामारी भी प्राकृतिक आपदा के अंतर्गत आते हैं।**(ii) मानव जनित आपदा -** वैसी आपदाएं जो मानव निर्मित साधनों या मानवीय क्रियाकलापों के कारण घटित होती हैं। जैसे प्रदूषण, विस्पोट, जहरीली गैसों का रिसाव, अगलगी, दंगा, युद्ध, आतंकवादी हमला, दुर्घटना इत्यादि।

आपदा प्रबंधन की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए आपदा प्रबंधन की आवश्यकता - अनिवार्यता का वर्णन कीजिए।

आपदा कोई भी हो उसका प्रबंधन अनिवार्य है। आपदा से ना सिर्फ विकास कार्य अवरुद्ध होते हैं, बल्कि विकास कार्यों में कई व्यवधान भी उत्पन्न हो जाते हैं। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर तथा राज्य मुख्यालय स्तर पर आपदा प्रबंधन की व्यवस्था की गई है, लेकिन इन व्यवस्थाओं के असफल होने से नई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। आपदा प्रबंधन की संकल्पना से तात्पर्य है कि आपदा से लोगो को, समाज को बचाया जा सके ताकि अधिक जान - माल की क्षति नहीं हो पावे, साथ ही सामाजिक सुविधा के लिए चलाए जा रहे विकास कार्यों में कोई अवरोध उत्पन्न न हो। यही कारण है कि प्रबंधन की आवश्यकता तथा अनिवार्यता निश्चित करना जरूरी है।

सुखाड़ के प्रबंधन हेतु भी आम लोगों के सहयोग से कार्य करना आवश्यक होता है। सामूहिक प्रयास से कुएं की खुदाई हो सकती है साथ ही रोजगार के नए क्षेत्र भी तलाशे जा सकते हैं। भूकंप और सुनामी भी भारत के लिए बड़ी चुनौती है, भूकंप के प्रबंधन हेतु नए तकनीक आधारित भवन निर्माण का कार्य किया गया है। भूकंप विरोधी भवनों के निर्माण में वृत्ताकार या बहूभुजिय आकृति के बदले आयताकार अथवा वर्गाकार भवन आकृति को प्राथमिकता दी गई है। इसी प्रकार से तटीय भारत में सुनामी की चेतावनी और प्रबंधन के लिए विशेष कार्य किए गए हैं। प्राकृतिक आपदा प्रबंधन का मूल उद्देश्य है कि आपको अपने आसपास घटने वाली किसी भी संभावित खतरे की पूर्व जानकारी हो और अधिक से अधिक जान-माल की क्षति को बचाया जा सके।